बौद्ध धर्म में द्वितोय बौद्ध संगीति

डॉ. रंजना रानी सिंघल
एसोसिएट प्रोफेसर, एच.ओ.डी. बौद्ध अध्ययन विभाग, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), दिल्ली वि"वविद्यालय.

Received: January 14, 2019 Accepted: February 25, 2019

ABSTRACT: *बौद्ध धर्म में संगीतियों का बहुत महत्व है। यदि बौद्ध संगीति न होती तो त्रिपिटक साहित्य भी अस्तित्व में नहीं आता। त्रिपिटकों में आज से 2600 वर्ष पूर्व का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक, धार्मिक, इतिहासों की जानकारी भी अधूरी रह जाती इसलिए पहली और दूसरी बौद्ध संगीति का महत्त्व है। बौद्ध संगीति को जानने के लिए हमारे पास चार मुख्य स्रोत हैं। पालि, संस्कृत, चीनी अनुवाद, तिब्बती अनुवाद इत्यादि। पालि में विनय पिटक, सुत्त पिटक, चुलवग्ग और बुद्ध घोष साहित्य शामिल है। मंजुश्री मूलकल्प व चीनी अनुवाद में भी इस द्वितीय संगीति का वर्णन मिलता है।*

Key Words: :

द्वितीय बौद्ध संगीति

स्रोत :– महाव"ा, चुलवग्ग, दीपव"ा, महावग्ग, समंतपसादिका तथा तिब्बती दुलवा एवं चीनी स्रोत में इस दूसरी बौद्ध संगीति होने की सूचना मिलती है। दूसरी संगीति की सृचना जिन अनेक मूल ग्रन्थों से प्राप्त होती हैं उसमें पालिविनयपटक के चुल्लवग्ग एवं सर्वास्तिवादी विनयक्षुद्रकवस्तु का स्थान मुख्य हैं। चुल्लवग्ग से परवर्ती पालि परम्परा निकली हैं। दूसरी और बुदोन और तारानाथ का विवरण विनयक्षुद्रकवस्तु पर आधारित हैं। भव्य, वसुमित्र, विनीतदेव एवं श्वांच्यांग ने भी द्वितिय संगीति का वर्णन किया हैं, किन्तु भव्य, वसुमित्र और विनीतदेव महासांघिकों के विनय विरूद्ध कार्यों का उल्लेख नहीं करते हैं वे संघभेद को केवल महादेव की 'पाँच प्रतिज्ञाओं' से प्रादुर्भूत मानते हैं। कुछ अन्य परवर्ती ग्रन्थों में भी द्वितोय संगीति के उल्लेख उपलब्ध होते हैं। जैसे कि महावस्तु अथवा मंजुश्रीमूलकल्प में। विनयपिटक का स्कन्धक नाम का भाग दूसरी संगीति के आसपास रचा गया होगा। वस्तुतः मूल स्कन्धक की रचना स्थविर परम्परा के उल्लेख के साथ समाप्त हो गयी थी। यह अ"ा प्रस्तुतः पालि विनय में उपलब्ध नहीं होता हैं, किन्तु मूल ग्रन्थ में संभवतः रहा होगा। इस प्रकार मुख्य ग्रंथ के समाप्त होने पर दूसरी संगीति का विवरण एक प्रकार से परि"ाष्ट का जोड़ना हैं और इस प्रकार के परि"ाष्ट का संयोजन उसमें वर्णित वृतांत की तत्कालीन ख्याति के कारण ही समझा जा सकता हैं ।

कारणः– चुल्लवग्ग में लिखा हैं कि वज्जी के भिक्षु दस बातें (दस वत्थूनि) ऐसी करते थे जिन्हें काकंडक–पुत्र य"ा धर्म सम्मत नहीं मानता था। वह उन्हें अनैतिक और अधर्मपूर्ण मानता था। वज्जी के भिक्षुओं ने य"ा को 'पटिसारणीय कम्म' का दंड़ देने का आदे"ा दिया। य"ा को अपने पक्ष समर्थन करना पड़ा। जनसाधारण के सामने उसने अपनी बात अद्भूत वक्तृव्य– कौ"ाल से रखी। इस पर वज्जियों ने 'उपेक्खणीय कम्म' नामक दंड उसे सुनाया जिसका अर्थ था य"ा का संघ से निष्कासन।

चुल्लवग्ग में इस अ"ा की व्याख्या सप्त"ातिका स्कन्धक हैं इसका आरम्भ इस प्रकार होता हैं – उस समय परिनिर्वाण के 100 वर्ष बीतने पर वै"ाली के वज्जिपुत्तक भिक्षु इन दस वस्तुओं का प्रचार करते थे– भिक्षुओं, श्रृंगि–लवण–कल्प विहित हैं, द्रव्यंमूलकल्प विहित हैं, ग्रामान्तर कल्प0, आवास कल्प0 अनुमति कल्प0, आचीर्ण कल्प0, अमथित कल्प0, जलोगिपान कल्प0, अद"ाक कल्प0, जातरूपरजत कल्प0 ।' इन दस बाता के ठीक–ठीक अर्थ दुर्बोध हैं।

उपरोक्त दस वस्तुएं चुल्लवग्ग में इस प्रकार दी गई है–

1. **सिंगीलोण कप्प** :– श्रृंगि–लवण–कल्प के अर्थ अनेक प्रकार से बताए गए हैं–'' सींग में नमक रखना, अथवा नमक बचा रखना, अथवा नमक बराबर अपने साथ रखना, अथवा नमक और अदरक अलग रख लेना'' ।
2. **द्वांगुल कप्प** :– द्रव्यगुल–कल्प का एक स्थान पर अर्थ मध्याह्न के बाद जब छाया दो अंगुल हो जाय तो भोजन करना बताया गया हैं। अन्य व्याख्या के अनुसार भोजन के अनन्तर दो उँगलियों से ऐस भोजन को उठा लेना जो कि जुठा नहीं था– यही इसका अर्थ करना चाहिए।
3. **गामान्तर कप्प** :– गामान्तर कप्प का एक अर्थ हैं दुबारा खाने के इरादे से गांव को जाना। गाँव जाकर भोजन लाना लेकिन बने हुए भोजन के नियम का पालन करना– यह भी अर्थ बताया गया हैं। विहार से भोजन अथवा योजनार्थ दूर होने पर यात्रा के समय भोजन करना, यह एक तीसरी व्याख्या हैं।
4. **आवास कल्पः**– आवास कल्प का एक अर्थ यह किया गया हैं कि एक ही सीमा के अन्दर दूसरा उपोसथ करना। अन्य व्याख्या के अनुसार यह एक ही विहार में पृथक कर्मवाचना का समर्थन है।
5. **अनुमति कप्प** :– अनुमति कल्प को कार्य करने के बाद अनुमति लेना, अथवा गलत काम अपन कर लेना और पीछे संघ की अनुमति माँगना, अथवा पहले संघ से पृथक् कर्म कर लेना तथा पीछे औरो की अनुमति माँगना बताया गया हैं ।
6. **आर्चीण कप्प** :– आर्चीण कल्प का तात्पर्य उपाध्याय के आचार का अनुकरण करना अथवा प्रचलित ढ़ंग से आचरण करना, अथवा अपने पिछले गृहस्थ जीवन के आचरण का अनुकरण करना बताया गया है।
7. **अमथित कप्प** :– अमथित कल्प को मध्याह्न भोजन के बाद दही खा लेना, अथवा बिना उबला दूध, दही और मक्खन मिलाकर खा लेना अथवा भोजन के प"चात् घी, शहद, दही और मक्खन मिलाकर खाना अथवा इसी का विकाल में खाना, अथवा आधे दूध, आधे दही को भोजन के प"चात् पीना बताया गया हैं।
8. **जलोगिम्पातुम्** :– जलोगी कल्प का अर्थ अभी न चुवाई हुई अप्राप्त–मद्य ताड़ी पीना, अथवा दरिद्र स्थिति में मद्य पीना, अथवा जलोगी – मद्य पीना, अथवा जोंक की तरह से चूसकर शराब पीना बताया गया हैं।
9. **अदसकम्–निसीदनम्** :– अद"ाक कल्प के अर्थ बताये गये हैं– बिना किनारी के आसन या चटाई का उपयोग, अथवा ऐसे नये आसन का उपयोग जिसमें पुराने आसन का भाग नये के किनार के तौर पर नहीं लगाया गया हैं, आसन को बिना जोड़–तोड़ के बनाना, आसन बनाने की नियत नाप न रखना।
10. **जातरूपरजतम्** :– जातरूपरजत– कल्प के अर्थ सोना–चाँदी भिक्षा में ग्रहण करना अथवा सोना–चाँदी और अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का या द्रव्य का ग्रहण करना बताये गये हैं ।

तिब्बती विवरण में इन दस वस्तुओं से भिन्न कुछ अन्य वस्तुएँ भी बतायी गयी हैं जैसे ''अचल'' का उच्चारण करना, भोजन में अभिरति, एवं जमीन खोदना अथवा दूसरे से खोदवाना। मही"ासक विनय में एक और नयी बात का उल्लेख हैं–''बैठना और खाना'' यद्यपि इसका ठीक–ठीक अर्थ दुर्बोध हैं।

इन दस विनय विरूद्ध वस्तुओं में अधिका"ा आध्यात्मिक दृष्टि से अन्यन्त गौण प्रतीत होती हैं किन्तु अन्य धर्मों के इतिहास से भी यह सुविदित हैं कि धार्मिक विवाद और संगीतिया बहुधा ऐसे ही छोटे–बडे आचार अथवा अभिव्यक्ति भेद से उत्पन्न होते रहें हैं। श्रीमती रिज डेबिड्स का कहना हैं कि वै"ाली के भिक्षुओं के इस विवाद में वस्तुतः एक प्रकार के प्रादे"िाक आवासों अथवा व्यक्तियों की स्वतन्त्रता का दावा अर्न्तनिहित हैं ।

कुछ अन्य विद्वानों ने भी इस विनय विरोध का कारण वै"ाली के भिक्षुओं की गणतन्त्रात्मक दृष्टि को माना हैं एवं यह कहा हैं कि वज्जिपुत्तक भिक्षु अपने को अर्हत कहने वाले बूढ भिक्षुओं की सर्वथा आज्ञाकारिता के लिए तत्पर नहीं थे। इतना तो स्पष्ट है कि स्थविर भिक्षु नियमों में अधिक कट्टर थे और वै"ाली के वज्जिपुत्तक भिक्ष आचार की अपेक्षा कृत कर्म संयत (दृष्टिभेद से, उदार) आद"ार्ा उपस्थित करते थे। भोजन एवं ि"ाक्षा संबंधी श्रृंगिलवण कल्प, द्रव्यंगूल0 ग्रामान्तर0, अमथित0, जलोगी0 जातरूपरजत0 से स्पष्ट हैं। अनुमति कल्प एवं आर्चीण कल्प आचार में अत्यधिक स्वाधीनता एवं अनियम के कारण हो सकते हैं।

संख्या– विनय संगीति में सात सौ (700) भिक्षु उपस्थित थे इसे सप्तसतिका कहा जाता है।

स्थान– द्वितीय बौद्ध संगीति के लिए वै"ाली के बालुकाराम विहार को चुना गया।

समय (कब कितना)– बुद्ध के परिनिर्वाण के एक शतक बाद वै"ाली में दूसरी परिषद् हुई ।

संरक्षण (राजा)– यह बौद्ध संगीति ि"ा"ाुनाग के पुत्र काला"ोक के शासन काल में हुई थी।

प्रधानता– द्वितीय बौद्ध संगीति की 'अध्यक्षता' सभापति के लिए सब्बकामी को चुना गया। जो 120 वर्ष के थे और आनन्द के ि"ाष्य थे। आयुष्मान् अजित् आसन प्रज्ञापक नियुक्त हुए अर्थात् भिक्षु अजित स्थान नियंत्रक बनाए गए। विवाद के निर्णय के लिए एक उद्वाहिका की बैठक हुई जिसमें चार पूरब और चार पि"चम के भिक्षुक चुने गए।

पूरब में भिक्षुओं में	**पश्चिम के भिक्षुओं में**
आयुष्मान सर्वकामी (अध्यक्ष)	आयुष्मान रेवत (अध्यक्ष)
आयुष्मान् साढ़,	आयुष्मान संभूत शाणवासी
आयुष्मान क्षुद्र"ोभित	आयुष्मान य"ा काकंडक पुत्त
आयुष्मान वार्षभाग्रामिक	आयुष्मान सुमन

कार्य– चुल्लवग्ग के अनुसार आयुष्मान् य"ा ने वै"ाली में उपोसथ के दिन वज्जिपुत्तक भिक्षुओं को उपासकों से संघ के लिए कार्षापण, अर्धकार्षापण, पादकार्षापण अथवा मा"ाक मांगते हुए देखा। भदत्त य"ा ने ये सब व्यवहार अधर्म"ाील बतलाए। उन्ह संघ से बहिष्कृत कर दिया गया। आयुष्मान् य"ा के विरोध करने पर वै"ाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने उनका प्रतिसारणीय कर्म करने का नि"चय किया। य"ा ने नियमतः अनुदूत मांगा और उसके साथ वै"ाली के उपासकों के समक्ष अपने पक्ष का प्राचीन संदर्भो से उद्वहरण देते हुए समर्थन किया। इस पर वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने आयुष्मान् य"ा का उत्पक्षणीय कर्म करना नि"चित किया। इस पर य"ा कौ"ाम्बी चले गये। वहाँ से उन्होनें पावा निवासी एवं पि"चम प्रवे"ा के अवन्ति और दक्षिणापथ के निवासी भिक्षुओं के पास दूत भेजा कि वै"ाली में अधर्म हो रहा ह उसका निवारण होना चाहिए। और भिक्षुओं को बुलवाया जिससे कि वे मिलकर इस मामले को तय करें। अधर्म प्रसार का रोकें और विनय की रक्षा करें।

आगे चलकर वह अहोगंगा पर्वत पर पंहुचे जहां आयुष्मान् संभूत साणवासी रहते थे। उन्होनें अभिवादन पूर्वक इस विषय पर विचार करने के लिए उनसे कहा। उन्होने विवाद शपथ में भाग लेने की स्वीकृति दे दी। इस बीच पि"चम से साठ (60) व पावा के छह (6) भिक्षु अहोगंगा पर्वत तथा अवंती और दक्षिण से अट्ठासी (88) अर्हत् वहां और आ गए। सबका यह विचार हुआ कि सोरेय्य में जों अर्हत रेवत सहजाति रहते है, उनकी राय ली जाए। वे सब वहां पहुचे। सब ने सोरेय्य में निवास करने वाले आयुष्मान् रेवत का अपने पक्ष में करने का संकल्प किया। आयुष्मान् रेवत इससे बचने के लिए सोरेय्य से संका"य चले गये। संका"य से कान्यकुब्ज, कान्यकुब्ज से उदुम्बर, उदुम्बर से अर्गलपुर और वहां से सहजाति। सहजाति में जाकर भिक्षु उन्हें पकड़ पाये।

आयुष्मान य"ा ने आयुष्मान् रेवत से वै"ाली में प्रचारित दस (10) वस्तुओं का उल्लेख किया और पूछा कि वे विहित हैं अथवा नहीं। रेवत ने उन वस्तुओं के अर्थ की जिज्ञासा प्रकट की। आयुष्मान् य"ा ने उनको विवादास्पद दस (10) वस्तुओं के अर्थ बताये। रेवत ने उन सब दस (10) कल्पों को निषिद्ध ठहराया और इस बात के लिए सहमत हुए कि वै"ाली में उनके प्रचार का विरोध किया जाए। दूसरी ओर वै"ाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने यह सुनकर कि य"ा काकंडकपुत्त अपने समर्थन के लिए पक्ष संग्रह कर रहें हैं, प्रतिपक्ष संग्रह का प्रयत्न किया। व भी आयुष्मान रेवत को अपनी ओर करने के लिए बहुत से साज सामान लेकर उनके पास गये। पात्र, चीवर, निषिदन, सूचीधर, कायाबन्धन, परिश्रावण, धर्मकरक आदि लेकर नाव से वज्जिपुत्तक भिक्षु सहजाति पहुचें। अतः उधर वज्जी के भिक्षु भी चुप नहीं थें। व भी रेवत सहजाति के पास पहुचें। उन्होनें बड़े–बड़ें उपहार रेवत को देने चाहे, जो उसने मना कर दिया रेवत के बीस (20) वर्षीय ि"ाष्य उत्तर को वज्जिया ने किसी तरह राजी कर लिया। वज्जिपुत्तकों के बहुत कहने पर उसने एक चीवर ग्रहण किया और इस बात पर राजी हुआ कि संघ के बीच में यह कह दे की पूर्वी जनपदों में बुद्ध भगवान् उत्पन्न होते है वहां के भिक्षु धर्मवादी और पावा के अधर्मवादी। आयुष्मान् उत्तर ने आयुष्मान रेवत से भी यह कहने का निवेदन किया किन्तु उन्होनें यह स्वीकार नहीं किया। विवाद के निर्णय के लिए वै"ाली प्रस्थान किया गया। उस समय आयुष्मान आनन्द के ि"ाष्य सर्वकामी नामक संघ स्थविर एक सौ बीस (120) वर्ष की अवस्था के थे और वै"ाली में रहते थे। वे भी आयुष्मान् य"ा के पक्ष में हो गये। उनका समर्थन न हो सका सात सौ भिक्षुओ की सभा हुई किन्तु पर कोई नि"चय नहीं हो सका पूर्व और पि"चम के चार–चार भिक्षुओं की एक समिति बनाई गई। भिक्षु अजीत स्थान नियन्त्रक बनाए गये ।

विवाद के निर्णय के लिए संघ के एकत्र होने पर बहुत समय तक बहस होती रहीं। अन्त में विवाद के निर्णय के लिए आयुष्मान् रेवत ने एक उद्वाहिका के चुनाव के लिए ज्ञप्ति प्रस्तुत की। चार पूर्वी और चार पि"चमी भिक्षु चुने गये। पूर्वी भिक्षुओ में आयुष्मान् सर्वकामी, आयुष्मान् साढ़, आयुष्मान क्षुद्र"ोभित और आयुष्मान वार्षभग्रामिक एवं पि"चमी भिक्षुओं में आयुष्मान् रेवत, आयुष्मान् संभूत शाणवासी, आयुष्मान् य"ा काकंडक –पुत्त और आयुष्मान सुमन चुने गये। आयुष्मान् अजित् आसन प्रज्ञापक नियुक्त हुए एवं बालुकाराम में विवाद के निर्णय के लिए उद्वाहिका की बैठक हुई। आयुष्मान् रेवत ने आयुष्मान् सर्वकामी से दसों वस्तुओं के विषय में प्र"न किया और उन सबको अविहित और विनय विरूद्ध ठहराया। सभी को अधर्मपूर्ण बताया गया। संघ की पूरी सभा ने यही निर्णय दिया। वज्जी के भिक्षुओं का आचरण अधर्मयुक्त धोषित हुआ। यह निर्णय समस्त संघ ने अनुमोदित किया कहते है। दीपवंस की परम्परा अनुसार वै"ाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने द्वितोय संगीति में संघ के निर्णय को स्वीकार नहीं किया और उन्होनें स्थविर अर्हतों के बिना एक अन्य सभा की एवं वहाँ अपने मत के अनुकुल दूसरा निर्णय लिया। यह सभा महासंघ या महासंगीति कही गयी। इसमें दस हजार (10000) भिक्षु एकत्र हुए। उन्होंने विनय और पांच निकायों म सुत्त का क्रम और अर्थ बदल दिये, कुछ संदर्भ निकाल दिये और कुछ अपने रचित संदर्भों का समावे"ा कर दिया। उन्होनें परिवार पटिसंभिदामग्ग,निद्देस, कुछ जातक, एवं अधिधम्म के छह (6) ग्रन्थों का प्रामाण्य अस्वीकार कर दिया। यहाँ पर स्मरणीय हैं कि ये ग्रन्थ वस्तुतः परवर्ती और मूल संदर्भ की दृष्टि से अप्रामाणिक हैं।

यह विचारणीय हैं कि दूसरी संगीति के विवरण में महासांघिकों के अभ्युदय का उल्लेख किसी विनय में उपलब्ध नहीं होता हैं न थेर वादियों के न महासांघिकों के। अतः संघभेद को वै"ाली की स्गीति का परवर्ती मानना ठीक होगा। वै"ाली की संगीति को संघभेद की आव"यक भूमिका मानने पर

महावंस की भी संगीति हो जाती हैं। महावंस के अनुसार इस समय मगध का राजा काला"ोक था। एक अन्य परम्परा, जिसका वसुमित्र, भव्य और विनीतदेव ने संरक्षण किया है यह बताती हैं कि पहला संघभेद विनय की इन दस (10) वस्तुओं के कारण न होकर महादेव की पांच वस्तुओं के कारण था। महादेव के संबंध में अभिधर्म महाविभाषा"ास्त्र में सूचना उपलब्ध होती हैं कि वे मथुरा मे एक ब्राह्मण व्यापारी के लड़के थे। पाटलिपुत्र के कुक्कुटारामविहार में उन्होने उपसम्पदा पायी। वहां वे आवास के प्रधान हो गये एवं स्थानीय राजा उनका मित्र और समर्थक। उनकी सहायता से महादेव ने अपनी पाँच वस्तुए प्रचारित की

श्वांच्वांग ने दस वस्तुओं और पांच वस्तुओं दोनों का ही उल्लेख किया हैं ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वी भिक्षु संगठन और सिद्धांत दोनों में ही पुरानी कट्टर परम्परा से अलग चले गये थें एवं वै"ाली की विनयपरक दूसरी संगीति के बाद पाटलिपुत्र में एक महासंगीति हुई जिसके फलस्वरूप मूल शाखा से अलग महासांघिक सम्प्रदाय का जन्म हुआ।

महादेव के द्वारा प्रचारित पांचों वस्तुए अर्हविषयक ह ऐसा प्रतीत होता हैं कि अर्हतो की संगीति से पराजित होकर महासांघिका ने अर्हतों पर ही आक्रमण किया। इन 'वस्तुओं' में पहली यह थी कि अर्हतो के लिए भी राग संभव हैं, दूसरी अर्हत में भी अज्ञान संभव हैं तीसरी अर्हतों में भी स"ाय हो सकता हैं, चौथी अर्हत भी दूसरे के द्वारा ज्ञान पा सकते हैं, पांचवी, सहसा शब्दोच्चारण करके मार्ग की प्राप्ति होती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अर्हत शब्द से यहाँ प्राचीन अर्थ में वास्तविक अर्हत् अभिप्रेत न होकर वे व्यक्ति अभिप्रेत हैं जो कि अपने को अर्हत् कहते हैं किन्तु जिनके विषय में राग,अज्ञान, सं"ाय आदि की सम्भावना का सब लोगो के लिए अभाव नही था।

दूसरी संगीति के विवरण से ज्ञात होता हैं कि उस समय संद्धर्भ अवन्ती से वै"ाली और मथुरा से कौ"ाम्बी तक नि"चय ही फैला हुआ था। भिक्षुओं में पूर्व और पि"चम के सामान्य भौगोलिक भेद के साथ वैनयिक और सैद्धान्तिक भेद उत्पन्न हो गये थे। पूर्वी भिक्षुओं के केन्द्र वै"ाली और पाटलिपुत्र थे । इसी वर्ग में महासांघिको का प्रारम्भिक विकास निष्पन्न हुआ ।

पि"चमी भिक्षुओं के केन्द्र कौ"ाम्बी, मथुरा एवं अवन्ती थे । कालान्तर में मथुरा एवं उत्तरापथ, वि"ोषतया क"मीर और गन्धार, मूल सर्वास्तिवादी तथा सर्वास्तिवादी सम्प्रदायों के विकास क्षेत्र सिद्ध हुए। स्थविरवाद की कौ"ाम्बी से दक्षिण पि"चम की और यात्रा सिंहल जाकर पूरी हुई।

उपर्युक्त वृत्तांत चुल्लवग्ग में दिया गया हैं। महावग्ग और दीपवंस में भिक्षु संख्या बढ़ा–चढ़ाकर दी गई हैं। दीपवंस और समंत–पासादिक के अनुसार वह सभा अजात"ात्रु के व"ाज काला"ोक के समय में हुई। काला"ाक पहले वज्जियों के पक्ष में था। बाद म उसने थेर–संघ की बात मान ली। दीपवंस के अनुसार वै"ाली के दस हजार भिक्षुओं की अलग से एक महासंगीति हुई। महावंस के अनुसार सात सौ (700) थेर भिक्खुओं ने धम्म का संकलन किया। बुद्धघोष के अनुसार अंतिम निर्णय के बाद सात सौ (700) भिक्षुओं ने विनय और धम्म का पाठ किया और एक नया संस्करण तैयार किया जिसमें पिटक,निकाय, अंग आर धर्मस्कंध बने। चीनी और तिब्बती स्त्रोतों के अनुसार, गौण विवरणों में चाहे कुछ मतभेद हो किन्तु दूसरी परिषद् की कथा सर्वमान्य हैं। इस परिषद् में बुद्ध धर्म में फूट पड़ गई और महासांघिक अलग हो गये।

उपर्युक्त विवरण से यह अनुमान करना स्वाभाविक हैं कि वै"ाली की संगीति में विनय की दस वस्तुओं के कारण जो संघभेद प्रारंभ हुआ वही सैद्धान्तिक बातों को लेकर कुछ वर्ष पीछे पाटलिपुत्र की संगीति में परिपूर्ण हुआ चूकिं वै"ाली की संगीति के स्थविर भिक्षु जो अपने को अर्हत मानते थे विनय की नई वस्तुओं के विरूद्ध थे। अतएवं कदाचित् इन स्थविर अर्हतों के विरोध में ही महादेव की नई पांच वस्तुए प्रतिपादित हुई । इस प्रकार प्रथम संघभेद के अनन्तर संघ दो भागों में विभक्त हो गया– एक और अधिकसंख्य वै"ाली और पाटलिपुत्र में कन्द्रित पूर्वी भिक्षु जिनमें की बृढे और अर्हत लोग कम थे, और जो विनय और धर्म के सम्बन्ध म नई बातें प्रचारित कर रहे थे। दूसरी और कौ"ाम्बी, मथुरा और अवन्ती में केन्द्रित, पि"चम के भिक्षु जिनमें की स्थविर भिक्षुओं का प्राधान्य था। इस कारण पहला वर्ग महासांघिक कहलाया, दूसरा स्थविर।

संक्षेप में दूसरी बौद्ध संगीति में निम्न काय हुए–

1. दस वस्तुओं को अवैध माना गया।
2. धर्म का संगायन हुआ जिसमें तीन पिटक, पांच निकायों, अंग व चौरासी हजार (84000) धर्म स्कन्धों का अस्तित्त्व संभव हो सका।
3. विनय का संगायन किया गया।
4. विवाद के निर्णय के लिए उद्वाहिका (संगीति) का चुनाव हुआ जिसमें अजित को आसन् प्रज्ञापक नियुक्त हुए और आयुष्मान सब्बकामी को सभापति बनाया गया और चार पूरब और चार पि"चम के भिक्षुओं को चुना गया।

पूरब में भिक्षुओं में	**पश्चिम के भिक्षुओं में**
आयुष्मान सवकामी (अध्यक्ष)	आयुष्मान रेवत (अध्यक्ष)
आयुष्मान् साढ़,	आयुष्मान संभूत शाणवासी
आयुष्मान क्षुद्र"ोभित	आयुष्मान य"ा काकंडक पुत्त
आयुष्मान वार्षाभाग्रामिक	आयुष्मान सुमन

5. बौद्ध संघ दो सम्प्रदायों में बंट गया एक महासंगिक और दूसरा स्थविरवादी कहलाये।
6. सामान्य भौगोलिक भेद के साथ विनय और सैद्धान्तिक भेद उत्पन्न हो गये थे। पूर्व के भिक्षु का केन्द्र वै"ाली, पाटलिपुत्र और इसी वर्ग में महासंघिकों का प्रारम्भिक विकास हुआ। पि"चमी भिक्षुओं के केन्द्र कौ"ाम्बी, मथुरा एवं अवन्ती थे। कालान्तर में मथुरा एवं उत्तरापथ, वि"ोषतया क"मीर और गन्धार, मूल सर्वास्तिवादी तथा सर्वास्तिवादी सम्प्रदायों के विकास क्षेत्र सिद्ध हुए। स्थविरवाद की कौ"ाम्बी से दक्षिण पि"चम की और यात्रा सिंहल जाकर पूरी हुई ।

परिणाम– दूसरी बौद्ध संगीति में निम्न परिणाम हुए–

1- दस वस्तुओं को अवैध माना गया। These 10 point"s practices to be unlawful.

2- धर्म का संगायन हुआ, जिसमें तीनों पिटक, पांच निकायों व 84 हजार स्कन्धों का अस्तित्त्व सम्भव हो सका। The settlement of the text of the Dhamma in which "TRIPITAKAS" five Nikayas, Angas and Eighty four thousand Dhamma Skandhas came into lime light and drew up new edition.

3- यह सिद्ध हो गया कि भिक्षुओं के संघ के पास मौखिक रूप से एक पुस्तक हैं विवादों के शमथ के लिए। Threre is a oral Book from which the Bhikku sangha completed its dispute.

4- पूर्व के विनय पिटक में कुछ परिवर्तन किया गया There are some changes done in early Vinaya.

5- भिक्खु व भिक्खुणी गाथा की रचना पूरी की गई First time Bhikku and Bhikkuni message compled in Gatha.

6- बुद्ध के उपदे"ाों का निराकरण कर उसे अंतिम रूप दिया गया Buddha message had given complete end.

7- दूसरी संगीति के परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म दो भागों में विभक्त हो गया– थेरवाद और महासांघिक। After second council there are a division in Buddhist Sangha i.e.Theravada & Mahasanghikas.

8- भौगोलिक स्थिति– भिक्षुओं मे पूर्व और पि"चम के समान्य भौगोलिक भेद के कारण वैभाषिक और सौत्रान्तिक भेद उत्पन्न हो गये थे।

9- पूर्वी भिक्षुओं का केन्द्र वै"ाली और पाटलिपुत्र था जहां महासांघिक धारा का विकास हुआ। पि"चमी भिक्षुओं का केन्द्र कौ"ाम्बी, मथुरा एवं अवन्ती था। कालान्तर में मथुरा एवं उत्तरापथ, वि"ोषतया क"मीर और गन्धार, मूल सर्वास्तिवादी तथा सर्वास्तिवादी सम्प्रदायों के क्षेत्र सिद्ध हुए। स्थविरवाद की कौ"ाम्बी से दक्षिण पि"चम की ओर यात्रा सिंहल जाकर पूरी हुई ।

ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय डॉ. भरत सिंह : पालि साहित्य का इतिहास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग 1972
2. सांकृत्यायन राहुल : पालि साहित्य का इतिहास, हिन्दी संस्थान, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ
3. उपध्याय बलदेव : बौद्ध दर्शन मीमांसा, तृतीय संस्करण, चौखम्बा विद्या भवन, 1978
4. पाण्डेय डॉ. गोविन्दचनद्र : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1976
5. Bapt P.V. : 2500 Years of Buddhism, Ministry of Infromation and Brodcasting, Governmetn of India, 24 May, 1956
6. Walpola Rahula, (1974). What the Buddha Taught (2nd ed.). New York: Grove Press.
7. **Tilmann Vetter, (1988), The Ideas and Meditative Practices of Early Buddhism, Brill**
8. **David J. Kalupahana (1994), A history of Buddhist philosophy, Delhi: Motilal Banarsidass**
9. **H. Robinson, Richard Johnson, Willard L; Wawrytko, Sandra A; DeGraff, Geoffrey (1996). The Buddhist Religion: A Historical Introduction. Belmont, CA: Wadsworth.**
10. **Bechert, Heinz ed. (1996). When Did the Buddha Live? The Controversy on the Dating of the Historical Buddha. Delhi: Sri Satguru.**
11. **Bhikk Ñāṇamoli, u (1992). The Life of the Buddha According to the Pali Canon (3rd ed.). Kandy, Sri Lanka: Buddhist Publication Society.**
12. **K Wagle, Narendra (1995). Society at the Time of the Buddha (2nd ed.). Popular Prakashan. ISBN 978-81-7154-553-7.**
13. **Kai, Weise (2013). The Sacred Garden of Lumbini: Perceptions of Buddha's birthplace. UNESCO. ISBN 978-92-3-001208-3.**
14. **GesheKelsang, Gyatso (2007), Introduction to Buddhism An Explanation of the Buddhist Way of Life, Tharpa, ISBN 978-0-9789067-7-1**
15. **Alex, Wayman (1997), Untying the Knots in Buddhism: Selected Essays, Motilal Banarsidass, ISBN 81-208-1321-9**
16. **Anthony K. Warder (1998). "Lokayata, Ajivaka, and Ajnana Philosophy". A Course in Indian Philosophy (2nd ed.). Delhi: Motilal Banarsidass Publishers. p. 45. ISBN 978-81-208-1244-4.**
17. **Narain A.K. (1993), "Book Review: Heinz Bechert (ed.), The dating of the Historical Buddha, part I", Journal of The International Association of Buddhist Studies, 16 (1): 187–201**
18. **Upadhyaya, KN (1971), Early Buddhism and the Bhagavadgita, Dehli: Motilal Banarsidass, p. 95, ISBN 978-81-208-0880-5**
19. **Mettanando, Bhikkhu Hinueber, Oskar von (2000), "The Cause of the Buddha's Death" (PDF), Journal of the Pali Text Society, XXVI: 105–18,**
20. **Tuladhar, Swoyambhu D. (November 2002), "The Ancient City of Kapilvastu – Revisited" (PDF), Ancient Nepal (151): 1–Smith, Peter (2000), "Manifestations of God", A concise encyclopaedia of the Bahá'í Faith, Oxford: Oneworld Publications, ISBN 1-85168-184-1,**
21. **Laumakis, Stephen (2008), An Introduction to Buddhist philosophy, Cambridge; New York: Cambridge University Press, ISBN 978-0-521-85413-9**
22. **Singh, Upinder (2016), A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century, Pearson, ISBN 978-81-317-1677-9**
23. **Armstrong, Karen (2000), Buddha, Orion, ISBN 978-0-7538-1340-9**
24. **Jain, Kailash Chand (1991), Lord Mahāvīra and His Times, Motilal Banarsidass, ISBN 978-81-208-0805-8**
25. **Buswell, Robert E, ed. (2003), Encyclopedia of Buddhism, 1, US: Macmillan Reference, ISBN 0-02-865910-4**
26. **Carrithers, M. (2001), The Buddha: A Very Short Introduction, Oxford University Press, ISBN 0-02-865910-4**
27. Sargent, W. L. and Thornton, S. (1864) The Buddha and His Religion: A Lecture at the Midlands Institute, Birmingham: William